

न्यारापन १५

१

अपने निजस्वरूप और निजधाम की स्थिति सदा याद रहती है? निराकारी दुनिया और निराकारी रूप दोनों की स्मृति इस पुरानी दुनिया में रहते भी सदा न्यारा और प्यारा बना देती है। इस दुनिया के हैं ही नहीं। हैं ही निराकारी दुनिया के निवासी, यहाँ सेवा अर्थ अवतरित हुए हैं - तो जो अवतार होते हैं उन्हीं को क्या याद रहता है? जिस कार्य अर्थ अवतार लेते हैं वही कार्य याद रहता है ना! अवतार अवतरित होते ही हैं धर्म की स्थापना के लिए - तो आप सभी भी अवतरित अर्थात् अवतार हो तो क्या याद रहता है? यही धर्म स्थापन करने का कार्य। स्वयं धर्म आत्मा बन धर्म स्थापन करने के कार्य में सदा रहने वाले, तो शक्ति अवतार हो ना! हर एक शक्ति, अवतार हैं।

पाण्डव भी शक्ति- रूप हैं। एक सर्वशक्तिवान है बाकि सब शक्तियाँ हैं, तो सब शक्ति अवतार हैं। सिर्फ यह भी स्मृति रहे तो कितनी मीठी जीवन का अनुभव करेंगे। हम इस मृत्युलोक के नहीं लेकिन अवतार हैं। सिर्फ यह छोटी सी बात याद रहे तो उपराम हो जायेंगे। अगर अपने को अवतार न समझ गृहस्थी समझते हो तो गृहस्थी की गाड़ी कीचड़ में फँसी रहती। गृहस्थी है ही बोझ की स्थिति और अवतार बिल्कुल हल्का। वह फँसा हुआ है वह बिल्कुल न्यारा। कभी अवतार कभी गृहस्थी यह चक्कर अगर चलता रहता तो संगमयुगी श्रेष्ठ जीवन का, सुहावने सुख के जीवन का कभी-कभी अनुभव होगा, सदा नहीं। ऐसे सुख के दिन फिर कभी नहीं आने है, एक एक संगम का दिन अति प्रिय है तो ऐसे प्रिय दिन का सुहावना समय कैसे व्यतीत करते हो? अमूल्य रीति से व्यतीत करते हो वा साधारण रीति से? एक-एक सेकेण्ड की वैल्यू क्या है – उसको जानते हो? ५००० वर्ष की श्रेष्ठ प्रालब्ध का आधार यह थोड़ी सी घड़ियाँ हैं, तो ऐसे अमूल्य घड़ियों को अमूल्य

रीति से यूज़ करना चाहिए ना। रतन को अगर पत्थर समान यूज़ करेंगे तो रिजल्ट क्या होगी? साधारण रीति से व्यतीत करना अर्थात् रतन की वैल्यू पत्थर के समान करना। अगर समय को व्यर्थ गँवाते हैं तो रतन को पत्थर के समान यूज़ करते हैं। समय का मूल्य रखना अर्थात् अपना मूल्य रखना। समय की पहचान है ही, लेकिन पहचान स्वरूप होकर चलना - यह है अटेन्शन की बात। इस संगम का एक सेकेण्ड भी क्या नहीं कर सकता। एक सेकेण्ड में यहाँ से चारों धाम का अनुभव करके आ सकते हो। ऐसे अनुभवी हो ?

२

सभी सदा अपने को ट्रस्टी समझकर चलते हो ? ट्रस्टी अर्थात् सदा हल्का, गृहस्थी अर्थात् सदा बोझ वाला। गृहस्थी होंगे तो उतरती कला में जायेंगे, ट्रस्टी होंगे तो चढ़ती कला में जायेंगे। ट्रस्टी सदा बेफिकर बादशाह होते अर्थात् फिकर से फारिग होते हैं उन्हें रूहानी फ़खुर रहता है कि हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं।

कैसे भी सरकमस्टान्सेज हो लेकिन स्वयं हल्का रहेगा, स्वयं सदा न्यारा। जरा भी वातावरण के प्रभाव में नहीं आयेंगे। गृहस्थी समझने से क्या, क्यों शुरू हो जाता, ट्रस्टी समझेंगे तो फुलस्टाप आ जाता, फुलस्टाप अर्थात् पावरफुल स्टेज का अनुभव।

३

क्रोध को भी जीत लिया है लेकिन किसी आत्मा के कोई संस्कार देखते हुए स्वयं अन्दर ज्ञान स्वरूप से नीचे आ जाते और उसी आत्मा से किनारा करने का प्रयत्न करते, क्योंकि उसको देख उसके सम्पर्क में रहते अवस्था नीचे ऊपर होती है इसलिए स्वभाव को देख किनारा करना, यह भी घृणा अर्थात् क्रोध का ही अंश है। जैसे क्रोध अग्नि से जलने के कारण दूर रहते हैं, तो यह सूक्ष्म घृणा भी क्रोध के अग्नि के समान, किनारा करा देती है। इसका रायल शब्द है- अपनी अवस्था को खराब करें इससे किनारा करना अच्छा है। न्यारा बनना और चीज है

किनारा करना और चीज है। प्यारे बन न्यारे बनते हो, वह राइट है। लेकिन सूक्ष्म घृणा भाव- "यह ऐसा है, यह तो बदलना ही नहं है।" ऐसे सदा के लिए उसको सूक्ष्म में श्रापित करते हो। सेफ रहो लेकिन उसको सर्टीफिकेट फाइनल नहीं दो। ऐसे ही विशेषता को देखते हुए सदा सर्व के प्रति श्रेष्ठ भावना और श्रेष्ठ कामना रखते हुए इस अंश को भी विदाई दो। अपनी श्रेष्ठ भावना और श्रेष्ठ कामना को छोड़ो नहीं, अपना बचाव करते हुए दूसरी आत्माओं को गिरा करके अपना बचाव नहीं करो। यह घृणा भाव अर्थात् गिराना। दूसरे को गिरा करके अपने को बचाना यह ब्राह्मणों की विशेषता नहीं। खुद को भी बचाओ, दूसरे के भी बचाओ। इसको कहा जाता है- विशेष बनना और विशेषता देखना। यह छोटी-छोटी बातें चलते-चलते दो स्वरूप धारण कर लेती हैं- एक दिलशिकस्त और दूसरा अलबेला। तो अभी रावण के अंश को सदा के लिए विदाई देने के लिए इन दोनों रूपों को विदाई दो। और सदा अपने में बाप द्वारा मिली हुई विशेषता को देखो। मेरी विशेषता नहीं, बाप

द्वारा मिली हुई विशेषता है। मेरी विशेषता सोचेंगे फिर अहंकार का अंश आ जायेगा। मेरी विशेषता से काम क्यों नहीं लिया जाता, मेरी विशेषता को जानते ही नहीं है! "मेरी" कहाँ से आई? विशेष जन्म की गिफ्ट है विशेषता पाना। तो जन्म दाता ने गिफ्ट दी- "मेरी" कहाँ से आई? मेरी विशेषता, मेरी नेचर, मेरी दिल यह कहती है, वा मेरी दिल यह करती है, यह मेरी नहीं है लेन वरी (चिंता) है। आप लोग कहते हो ना- वरी, हरी, करी। समझा- यही अंश समाप्त करो और सदा बाप द्वारा मिली हुई स्वयं की विशेषता और सर्व की विशेषता देखो अर्थात् सदा स्वयं को और सर्व को बधाई दो। नष्टोमोहा नहीं हुए हो क्या? अच्छा- मोह का रायल रूप कोई भी वस्तु व व्यक्ति अच्छा लगता है, यह, यह चीज मुझे अच्छी लगती है, मोह नहीं लेकिन अच्छी लगती है। अगर किसी भी व्यक्ति या वस्तु में अच्छा लगता तो सब अच्छा लगना चाहिए- चत्तियों वाले कपड़े भी अच्छे तो बढ़िया कपड़ा भी अच्छा। ३६ प्रकार के भोजन भी अच्छे तो सूखी रोटी और गुड़ भी अच्छा। हर वस्तु अच्छी, हर

व्यक्ति अच्छा। ऐसे नहीं- यह ज्यादा अच्छा लगता है! यह वस्तु ज्यादा अच्छी लगती है ऐसा समझकर कार्य में नहीं लगाओ। दवाई है, दवाई करके भले खाओ। लेकिन अच्छा लगता है इसीलिए खाओ, यह नहीं। अच्छा अर्थात् अट्रैक्शन जायेगी। तो यह है मोह का अंश। खाओ, पियो, मौज करो लेकिन अंश को विदाई दे करके न्यारे बन प्रयोग करने में प्यारे बनो। समझा- ?

४

बेगमपुर के बादशाह। इस पुरानी दुनिया के बादशाह नहीं, लेकिन बेगमपुर के बादशाह। यह ब्राह्मण परिवार बेगमपुर अर्थात् सुख संसार है। तो इस सुख के संसार बेगमपुर के बादशाह बन गये। हिज़ होलीनेस भी हो ना। ताज भी है तख्त भी है। बाकी क्या कमी है। कितना बढ़िया ताज है। लाइट का ताज पवित्रता की निशानी है। और बापदादा के दिलतख्तनशीन

हो। ते बेगमपुर के बादशाहों का ताज भी न्यारा और तख्त भी न्यारा है। बादशाही भी न्यारी तो बादशाह भी न्यारे हो।

५

कर्म और योग सदा साथ-साथ रहता है? कर्मयोगी हर कर्म में स्वतः ही सफलता को प्राप्त करता है। कर्मयोगी आत्मा कर्म का प्रत्याक्षल उसी समय भी अनुभव करता और भविष्य भी जमा करता, तो डबल फायदा हो गया ना। ऐसे डबल फल लेने वाली आत्मायें हो। कर्मयोगी आत्मा कभी कर्म के बन्धन में नहीं फँसेगी। सदा न्यारे और सदा बाप के प्यारे। कर्म के बन्धन से मुक्त-इसको ही कर्मातीत कहते हैं। कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत हो जाओ। कर्म से न्यारे नहीं, कर्म के बन्धन में फँसने से न्यारे-असको कहते हैं कर्मातीत। कर्मयोगी स्थिति कर्मातीत स्थिति का अनु-भव कराती है। तो किसी बंधन में बंधन वाले तो नहीं हो ना? औरों को भी बंधन से छुड़ाने वाले। जैसे बाप ने छुड़ाया, ऐसे बच्चों का भी काम

है छुड़ाना, स्वयं कैसे बंधन में बंधेंगे ? कर्मयोगी स्थिति अति पयरी और न्यारी है। इससे कोई कितना बड़ा कार्य हो लेकिन ऐसे लगेगा जैसे काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं। चाहे कितना भी मेहनत का, सख्त खेल हो, फिर भी खेल में मजा आयेगा ना। जब मल्लयुद्ध करते हैं तो कितनी मेहनत करते हैं। लेकिन जब खेल समझकर करते हैं तो हंसते-हंसतक करते हैं। मेहनत नहीं लगती, मनोरंजन लगता है। तो कर्मयोगी के लिए कैसा भी कार्य हो लेकिन मनोरंजन है, संकल्प में भी मुश्किल का अनुभव नहीं होगा।

६

सदा बाप की अति स्नेही, सहयोगी आत्मायें अनुभव करते हो ? स्नेही की निशानी क्या होती है ? जिससे स्नेह होता है उसके हर कार्य में सहयोगी जरूर होंगे। अति स्नेही आत्मा की निशानी सदा बाप के श्रेष्ठ कार्य में सहयोगी होगी। जितना-जितना सहयोगी, उतना सहजयोगी क्योंकि बाप के सहयोगी हैं

ना। दिन-रात यही लग्न रहे-बाबा और सेवा, इसके सिवाए कुछ है ही नहीं। अगर लौकिक कार्य भी करते हो तो बाप की श्रीमत प्रमाण करते हो, इसलिए वह भी बाप का कार्य है। लौकिक में भी अलौकिकता ही अनुभव करेंगे, कभी लौकिक कार्य समझन थकेंगे, न फंसेंगे, न्यारे रहेंगे। तो ऐसे स्नेही और सहयोगी आत्मायें हो। न्यारे होकर कर्म करेंगे तो बहुत अच्छा कर्म होगा। कर्म में फंसकर करने से अच्छा नहीं होता, सफलता भी नहीं होती, मेहनत भी बहुत और प्राप्ति भी नहीं। इसलिए सदा बाप के स्नेह में समाई हुई सहयोगी आत्मायें हैं। सहयोगी आत्मा कभी भी माया की सायोगी हो नहीं सकती, उसका माया से किनारा हो जायेगा। हर संकल्प में 'बाबा' और 'सेवा', तो जो नींद भी करेंगे, उसमें भी बड़ा आराम मिलेगा, शान्ति मिलेगी, शक्ति मेलेगी। नींद, नींदनहीं होगी, जैसे कमाई करके खुशी में लेटे हैं। इतना परवर्तन हो जाता है! बाबा-बाबा करते रहो। बाबा कहा और कार्य सफल हुआ पड़ा है। क्योंकि बाप

सर्वशक्तिवान है। सर्वशक्तिवान बाप की याद स्वतः ही हर कार्य को शक्तिशाली बना देती है।

७

भट्टी में तो बहुत कुछ सुना होगा ऐसे तो नहीं कि बहुत सुनते हो तो बिन्दु स्वरूप में रहना मुश्किल हो जाता है? परन्तु बिन्दु रूप में स्थित रहने की कमी का कारण यही है कि पहला पाठ ही कच्चा है। कर्म करते हुए अपने को अशरीरी आत्मा महसूस करें। यह सारे दिन में बहुत प्रैक्टिस चाहिए। प्रैक्टिकल में न्यारा होकर कर्तव्य में आना। यह जितना-जितना अनुभव करेंगे उतना ही बिन्दु रूप में स्थित होते जावेंगे। परन्तु यह अटेन्शन कम रहता है। आप कहेंगे समय नहीं मिलता है लेकिन समय तो निकाल सकते हो। अगर लक्ष्य है तो जैसे कोई विशेष काम पर जाता है तो उसके लिए आप खास ख्याल रखकर भी समय निकालते हो ना। यही संगम का थोड़ा समय जो रहा हुआ है उसमें यह विशेष काम है। विशेष काम समझकर बीच-बीच में

समय निकालो तो निकल सकता है। परन्तु अभ्यास नहीं है इसलिए सोचते ही सोचते समय हाथों से चला जा रहा है। आप ध्यान रखो तो जैसी-जैसी परिस्थिति उसी प्रमाण अपनी प्रैक्टिस बढ़ा सकते हो। इस अभ्यास में तो सभी बच्चे हैं। वास्तव में बिन्दु रूप में स्थित होना कोई मुश्किल बात नहीं है। जितना-जितना न्यारा बनेंगे तो बिन्दु रूप तो है ही न्यारा। निराकार भी है। तो न्यारा भी है आप भी निराकारी और न्यारी स्थिति होंगे तो बिन्दु रूप का अनुभव करेंगे। चलते-फिरते अव्यक्त स्थिति का अनुभव कर सकते हो। प्रैक्टिस ऐसी सहज हो जायेगी कि जो जब भी चाहो तभी अव्यक्ति स्थिति में ठहर जाओगे। एक सेकेण्ड के अनुभव से कितनी शक्ति अपने में भर सकते हो। वह भी अनुभव करेंगे और ब्रेक देने मोड़ने की शक्ति भी अनुभव में आ जायेगी। तो बिन्दु रूप का अनुभव कोई मुश्किल नहीं है। संकल्प ही नीचे लाता है, संकल्प को ब्रेक देने की पावर होगी तो ज्यादा समय अव्यक्त स्थिति में स्थित रह सकेंगे। अपने को आत्मा समझ उस स्वरूप में स्थित होना है।

जब स्व-स्थिति में स्थित होंगे तो भी अपने जो गुण हैं वह तो अनुभव होंगे ही। जिस स्थान पर पहुँचा जाता है उसके गुण ना चाहते हुए भी अनुभव होते हैं। आप किसी शीतल स्थान पर जायेंगे तो ना चाहते हुए भी शीतलता का अनुभव होगा। यह भी ऐसा ही है। आत्म अभिमानी अर्थात् बाप की याद। आत्मिक स्वरूप में बाबा की याद नहीं रहे यह तो हो नहीं सकता है। जैसे बापदादा दोनों अलग-अलग नहीं हैं वैसे आत्मिक निश्चय बुद्धि से बाप की याद भी अलग नहीं हो सकती है। क्या एक सेकेण्ड में अपने को बिन्दु रूप में स्थित नहीं कर सकते हो? अगर अभी सबको कहें कि यह ड्रिल करो तो कर सकते हो? बिन्दु रूप में स्थित होने से एक तो न्यारेपन का अनुभव होगा। और जो आत्मा का वास्तविक गुण है उसका भी अनुभव होगा। यह भी प्रैक्टिस करो क्योंकि अब समय कम है। कार्य ज्यादा करना है। अभी समय जास्ती और काम कम करते हो।